

VISHVA-JYOTI

R. N. NO. 1/57

ISSN 0505-7523

REGD. NO. PB-HSP-01

CURRENCY PERIOD:

(1.1.2015 TO 31.12.2017)

६५, ३-४

जून-जुलाई -2016

विश्वज्योति

सन्त कबीर विरीषांक

भाग - २



विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होशियारपुर

एक प्रति का मूल्य : २५ रुपये

डॉ० रूपमाला शर्मा	कबीर और लोक-कल्याण	लेख	51
डॉ० उमा जैन	कबीर की मोक्ष-अवधारणा	लेख	56
डॉ० अरुणा पाठक	कबीर: सामाजिक एवं दार्शनिक स्वरूप	लेख	59
डॉ० गिराज किशोर	जीवन में सुख संचरणहेतु कबीर के सरल विचार	लेख	64
डॉ० नीति शर्मा	प्रेमरत्न धन	लेख	66
डॉ० विद्यानन्द "ब्रह्मचारी"	बादशाह सिकन्दर लोदी और महात्मा कबीर	लेख	69
डॉ० अरविन्द कुमार	तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी	लेख	74
डॉ० नीरू मेहता	कबीरकाव्य मानवीय एकता की उपलब्धि नहीं, खोज की कविता है।	लेख	78
सुश्री सीमा कुमारी	कबीर के मत में माया	लेख	82
श्री जितेन्द्र कौशिक	कबीर का रहस्यवाद	लेख	85
श्री मंगलसिंह अहिरवार	अधुनातन कहौ या पुरातन बात: कबीरदास	लेख	87
	संस्थान-समाचार		91
	विविध-समाचार		94
	पुण्य-पृष्ठ		97-148

तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी

-डॉ० अरविन्द कुमार

हिन्दी साहित्य में कबीर साहब बड़े सम्मान के साथ उद्धृत किये जाते हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन समाज को सत्य और वास्तविकता से परिचित कराते बीता। निर्गुण काव्यधारा के कबीर साहब भक्त और कवि बाद में थे, समाज-सुधारक पहले कहे जा सकते हैं। उनकी कविताओं में अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन है। संत कबीर साहब वेद-वेदान्त के पंडित को चुनौति देते हुए कहते हैं कि-
तू कहता कागद की लेखी,

मैं कहता आखिन की देखी।

मैं कहता सुरझावन हारी,

तू राखा उरझोय रे॥

स्पष्ट रूप से इस पद से विदित होता है कि कबीर साहब जो कुछ संदेश देना चाहते हैं, वह आंखों देखी घटना का जिक्र करते हैं। वे वही कहते हैं जो समाज में हो रहा है, और जिसको वे अपने खुली आंखों द्वारा अवलोकन करते हैं। वे पोथी में लिखी हुई बातों या ज्ञानों में

उलझना नहीं चाहते। वे प्रयोगधर्मी की तरह पहले वस्तु का प्रयोग करके तब मानने व मनवाने का काम करते हैं।

“जिस युग में कबीर साहब का जन्म हुआ था और जिन परिस्थितियों में उन्हें जीना पड़ा था, उसके आधार पर सहज ही अनुभव किया जा सकता है, कि जो कुछ वे कह सके या कर सके, उसे कितना साहस और जीवट के साथ उन्हें कहना पड़ा होगा। सचमुच जान की बाजी लगाकर, सिधौरा हाथ में लेकर मैदान में उतर पड़ने वाला शूरमा ही वह सब कुछ कह सकता है। हम आज एक मानवधर्म और मानव-संस्कृति की बात करते हैं। पर कितने ऐसे हैं और उस विषय पर कुछ कह पाते हैं। कबीर यह सब पांच सौ साल पहले कह सके और कह ही नहीं सके अपने आचरण में उसे उतार भी सके थे। उनके पास इतना आत्मविश्वास था कि वे साहस के साथ यह भी कह सके कि उनका रास्ता ही एकमात्र रास्ता है